शकरकंद नर्सरी की उन्नत तकनीक

डॉ. एस. सुनिता ,डॉ. जे. सुरेश कुमार एवं डॉ. पद्माक्षी ठाकुर

शकरकंद एक शाकीय एवं बहुवर्षीय फसल है, वार्षिक फसल लेने हेतु इसका प्रवर्धन वानस्पतिक विधि से सामान्यतः लता कर्तन से एवं कभी कभार कन्द से किया जाता है। सामान्यतः लता कर्तन के द्वारा ही प्रवर्धन किया जाता है। लता कर्तन प्राप्त करने हेतु, संग्रहित कन्दो या ताजी तैयार की गई लता कर्तन से पौंधशाला (नर्सरी) तैयार की जाती है। एक हेक्टेयर के लिए रोपण सामग्री प्राप्त करने हेतु शकरकंद की पौधशाला दो चरणों में तैयार की जाती है।

प्राथमिक नर्सरी (पौधशाला/रोपणी)

मुख्य फसल लगाने के लिए 03 महीनें पहले प्राथमिक नर्सरी तैयार की जाती है। एक हेक्टेयर हेतु पर्याप्त लता कर्तन की आपूर्ति 100 वर्ग मी. क्षेत्र से की जा सकती है, जिसके लिए घुन रहित एवं स्वस्थ कंद आवश्यक होते है। मेंड़ो के बीच की दूरी 60 से.मी. रखी जाती है एवं उसमें 20 से.मी. की दूरी पर कन्दों को क्षैतिज रूप से लगाया जाता है एवं मृदा की पतली परत से ढंक दिया जाता है। शुरूआत के दिनों में हर एक दिन के अंतराल में इसकी सिंचाई की जानी चाहिये, उसके उपरांत हर तीन दिन में एक सिंचाई आवश्यक है। एक सप्ताह के भीतर कन्दों में अंकुरण आने लगते है। लताओं की त्वरित वृद्धि हेतु नर्सरी में यूरिया देनी चाहिये, 100 वर्ग मीटर की नर्सरी हेतु 1.5 कि.ग्रा. यूरिया को रोपण के 15 दिन बाद देना चाहिये। 45 दिन के उपरान्त लताओं को 20–30 सें.मी. की लम्बाई में कटाई कर द्वितीयक नर्सरी में बहुगुणन हेतु लगाया जाता है।

द्वितीयक नर्सरी

प्राथमिक नर्सरी से एकत्रित की गई लता कर्तन के बढ़वार हेतु इसे 300 वर्ग मीटर की द्वितीयक नर्सरी में लगाया जाता है जो कि 01 हेक्टेयर क्षेत्र में रोपाई हेतु प्रर्याप्त होते है। इसमें प्रतिवर्ग मीटर के अनुसार 1 कि.ग्रा. गोबर खाद डाला जाता है एवं 60 से.मी. की दूरी पर मेंड़ बनाये जाते है। इन मेंड़ो पर 20–20 से.मी. की दूरी पर प्राथमिक नर्सरी से प्राप्त की गयी ताजी लता कर्तनों को लगाया जाता है। लता कर्तन को लगाने से पहले इसे 0.02 % क्लोरपायरीफॉस (20 EC) में 10 मिनट तक डुबोकर उपचारित किया जाता हैं, ताकि घुन का संक्रमण न हो। अच्छे वानस्पतिक वृद्धि हेतु 5 कि.ग्रा. यूरिया को दो चरणों में रोपण के 15 दिन एवं 30 दिन के उपरांत में देना चाहिये। शुरूआत के 05 दिनों में प्रतिदिन सिंचाई की जानी चाहिये एवं उसके पश्चात् एक सप्ताह तक एक दिन के अंतराल में एवं उसके बाद तीन दिन मे एक बार सिंचाई की जानी चाहिये। 40–45 दिन में लताएं मुख्य खेत में रोपण हेतु तैयार हो जाती है। लता कर्तन के प्रारंभिक एवं मध्य भाग से 20–30 से.मी. की लम्बाई में लता कर्तन तैयार किये जाते है जिसमें की 3–4 कलिकायें हो एवं रोपण से पूर्व तक इन लता कर्तनों को पत्तियों के साथ ही गट्ठा बना कर छायादार स्थान पर रख दिया जाता है।

प्रारूप

नर्सरी में बनाये गये मेड

मेंड़ो में कन्दो की रोपाई

कन्दो को मृदा से ढकना

प्राथमिक नर्सरी में लता वृद्धि

कीटनाशक से उपचार

मेड़ो में लता कर्तन लगाना

द्वितीयक नर्सरी में लता वृद्धि

रोपण हेतु तैयार लता कर्तन

लाभ

- लागत प्रभावी विधि
- नई किस्मों की वृहद पैमाने पर बहुगुणन हेतु सरल विधि
- एक समान एवं स्वस्थ रोपण सामग्री का उत्पादन

फसल उत्पादन तकनीकी पत्रक श्रेणी

सितम्बर 2021

द्वारा प्रकाशित –
डॉ. एम.एन. शीला,
निर्देशक

भाकृअनुप – केंद्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान
श्रीकार्यम, तिरूवनन्तपुरम 695 017, केरल, भारत
ICAR-Central Tuber Crops Research Institute
Indian Council of Agricultural Research
Sreekariyam P.O., Thiruvananthapuram 695017, Kerala

Telephone 0471-2598551 to 2598554; Fax: 0471-2590063
E-mail: director.ctcri@icar.gov.in; Website: http://www.ctcri.org